सभी
व्रत दिन के जानकारियां

व्रत दिन

शिव और सोमवारः

वैसे श्रावण मास का प्रत्येक दिन पवित्र माना जाता हैपर सोमवार को विशेष पूजा होती है। पौराणिक मान्यता है कि श्रावण मास में हुए समुद्र मंथन से निकले हलाहल का पान सोमवार को ही शिव ने किया था। शिव अपने सिर पर सोम (चंद्रमा) को धारण करते हैं। पहली सोमवारी को ले व्रत व पूजन की घर-घर में तैयारी है।

कैसे रखें सोमवारी व्रतः

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार सोमवार व्रत के तीन प्रकार हैं। सोमवारसोलह सोमवारसौभ्य प्रदोष। परंतु व्रत को श्रावण मास में आरंभ करना शुभ माना जाता है। व्रत सोमवार सूर्योदय से प्रारंभ होकर तीसरे पहर तक रखा जाता है। कुछ भक्त सूर्योदय से सूर्यास्त तक निर्जला रहते हैं। कुछ फलाहार करते हैं तो कुछ नमक रहित भोजन।

सोमवार व्रत की कथा सुनी जाती हैआरती व प्रसाद वितरण किया जाता है। गौरक्षणी की इंदु देवी कहती हैं विगत 25 वर्षो से सोमवारी व्रत रख रही हैं। इससे शिव की कृपा बनी रहती है। कालीस्थान के ओमप्रकाश सिंह कहते हैं सोमवारी व्रत से नयी उर्जा व शक्ति मिलती है।

सोमवार व्रत कथाः

नगर में एक बहुत धनवान साहूकार रहता थाजिसके घर में धन की कमी नहीं थी। परन्तु उसको एक बहुत बड़ा दुःख था कि उसके कोई पुत्र नहीं था। वह इसी चिन्ता में दिन-रात लगा रहता था।

वह पुत्र की कामना के लिये प्रत्येक सोमवार को शिवजी का व्रत और पूजन किया करता था तथा सायंकाल को शिव मन्दिर में जाकर के शिवजी के सामने दीपक जलाया करता था। उसके उस भक्तिभाव को देखकर एक समय श्री पार्वती जी ने शिवजी महाराज से कहा कि महाराजयह साहुकार आप का अनन्य भक्त है और सदैव आपका व्रत और पूजन बड़ी श्रद्धा से करता है। इसकी मनोकामना पूर्ण करनी चाहिए।

शिवजी ने कहा- “हे पार्वती! यह संसार कर्मक्षेत्र है। जैसे किसान खेत में जैसा बीज बोता है वैसा ही फल काटता है। उसी तरह इस संसार में जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल भोगते है।” पार्वती जी ने अत्यन्त आग्रह से कहा- “महाराज! जब यह आपका अनन्य भक्त है और इसको अगर किसी प्रकार का दुःख है तो उसको अवश्य दूर करना चाहिए क्योंकि आप सदैव अपने भक्तों पर दयालु होते हैं और उनके दुःखों को दूर करते हैं। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मनुष्य आपकी सेवा तथा व्रत क्यो करेंगे?”

पार्वती जी का ऐसा आग्रह देख शिवजी महाराज कहने लगे- “हे पार्वती! इसके कोई पुत्र नहीं है इसी चिन्ता में यह अति दुःखी रहता है। इसके भाग्य में पुत्र न होने पर भी मैं इसको पुत्र की

प्राप्ति का वर देता हूँ। परन्तु यह पुत्र केवल १२ वर्ष तक जीवित रहेगा। इसके पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। इससे अधिक मैं और कुछ इसके लिए नही कर सकता। यह सब बातें साहूकार सुन रहा था। इससे उसको न कुछ प्रसन्नता हुई और न ही कुछ दुःख हुआ। वह पहले जैसा ही शिवजी महाराज का व्रत और पूजन करता रहा।

कुछ काल व्यतीत हो जाने पर साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और दसवे महीने में उसके गर्भ से अति सुन्दर पुत्र की प्राप्ति हुई। साहूकार के घर में बहुत खुशी मनाई गई परन्तु साहूकार ने उसकी केवल बारह वर्ष की आयु जानकर अधिक प्रसन्नता प्रकट नही की और न ही किसी को भेद ही बताया।

जब वह बालक ११ वर्ष का हो गया तो उस बालक की माता ने उसके पिता से विवाह आदि के लिए कहा तो वह साहूकार कहने लगा कि अभी मैं इसका विवाह नहीं करूंगा। अपने पुत्र को काशी जी पढ़ने के लिए भेजूंगा। फिर साहूकार ने अपने साले अर्थात् बालक के मामा को बुला करके उसको बहुत सा धन देकर कहा तुम उस बालक को काशी जी पढ़ने के लिये ले जाओ और रास्ते में जिस स्थान पर भी जाओ यज्ञ तथा ब्राह्मणों को भोजन कराते जाओ।

वह दोनों मामा-भानजे यज्ञ करते और ब्राह्मणों को भोजन कराते जा रहे थे। रास्ते में उनको एक शहर पड़ा। उस शहर में राजा की कन्या का विवाह था और दुसरे राजा का लड़का जो विवाह कराने के लिये बारात लेकर आया था वह एक आँख से काना था। उसके पिता को इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं वर को देख कन्या के माता पिता विवाह में किसी प्रकार की अड़चन पैदा न कर दें।

इस कारण जब उसने अति सुन्दर सेठ के लड़के को देखा तो मन में विचार किया कि क्यों न दरवाजे के समय इस लड़के से वर का काम चलाया जाये। ऐसा विचार कर वर के पिता ने उस लड़के और मामा से बात की तो वे राजी हो गये फिर उस लड़के को वर के कपड़े पहना तथा घोड़ी पर चढा दरवाजे पर ले गये और सब कार्य प्रसन्नता से पूर्ण हो गया। फिर वर के पिता ने सोचा कि यदि।

विवाह कार्य भी इसी लड़के से करा लिया जाय तो क्या बुराई है? ऐसा विचार कर लड़के और उसके मामा से कहा-यदि आप फेरों का और कन्यादान के काम को भी करा दें तो आपकी बड़ी

कृपा होगी और मैं इसके बदले में आपको बहुत कुछ धन दूंगा तो उन्होनें स्वीकार कर लिया और विवाह कार्य भी बहुत अच्छी तरह से सम्पन्न हो गया।

परन्तु जिस समय लड़का जाने लगा तो उसने राजकुमारी की चुन्दड़ी के पल्ले पर लिख दिया कि तेरा विवाह तो मेरे साथ हुआ है परन्तु जिस राजकुमार के साथ तुमको भेजेंगे वह एक ऑख से काना है और मैं काशी जी पढ़ने जा रहा हूँ।

लड़के केजाने के पश्चात उस राजकुमारी ने जब अपनी चुन्दड़ी पर ऐसा लिखा हुआ पाया तो उसने राजकुमार के साथ जाने से मना कर दिया और कहा कि यह मेरा पति नहीं है। मेरा विवाह इसके साथ नहीं हुआ है। वह तो काशी जी पढ्ने गया है। राजकुमारी के माता-पिता ने अपनी कन्या को विदा नहीं किया और बारात वापस चली गयी।

उधर सेठ का लड़का और उसका मामा काशी जी पहुंच गए। वहाँ जाकर उन्होंने यज्ञ करना और लड़के ने पढ़ना शुरू कर दिया। जब लड़के की आयु बारह साल की हो गई उस दिन उन्होंने यज्ञ रचा रखा था कि लड़के ने अपने मामा से कहा मामाजी आज मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है। मामा ने कहा अन्दर जाकर सो जा। लड़का अन्दर जाकर सो गया और थोड़ी देर में उसके प्राण निकल गए।

जब उसके मामा ने आकर देखा तो वह मुर्दा पड़ा है तो उसको बड़ा दुःख हुआ और उसने सोचा कि अगर मैं अभी रोना- पीटना मचा दूंगा तो यज्ञ का कार्य अधूरा रह जाएगा। अतः उसने जल्दी से यज्ञ का कार्य समाप्त कर ब्राह्मणों के जाने के बाद रोना-पीटना आरम्भ कर दिया। संयोगवश

उसी समय शिव-पार्वतीजी उधर से जा रहे थे। जब उन्होने जोर- जोर से रोने की आवाज सुनी तोपार्वती जी कहने लगी- “महाराज! कोई दुखिया रो रहा है इसके कष्ट को दूर कीजिए।

जब शिव- पार्वती ने पास जाकर देखा तो वहां एक लड़का मुर्दा पड़ा था। पार्वती जी कहने लगीं- महाराज यह तो उसी सेठ का लड़का है जो आपके वरदान से हुआ था। शिवजी कहने लगे- “हे पार्वती! इस बालक को और आयु दो नहीं तो इसके माता-पिता तड़प- तड़प कर मर जायेंग।” पार्वती जी के बार-बार आग्रह करने पर शिवजी ने उसको जीवन वरदान दिया और शिवजी महाराज की कृपा से लड़का जीवित हो गया। शिवजी और पार्वती कैलाश पर्वत को चले गये।

तब वह लड़का और मामा उसी प्रकार यज्ञ करते तथा ब्राह्मणों को भोजन कराते अपने घर की ओर चल पड़े। रास्ते में उसी शहर में आए जहां उसका विवाह हुआ था। वहां पर आकर उन्होने यज्ञ आरम्भ कर दिया तो उस लड़के के ससुर ने उसको पहचान लिया और अपने महल में ले जाकर उसकी बड़ी खातिर की साथ ही बहुत से दास-दासियों सहित आदर पूर्वक लड़की और जमाई को विदा किया।

जब वह अपने शहर के निकट आए तो मामा ने कहा कि मैं पहले तुम्हारे घर जाकर खबर कर आता हूँ। जब उस लड़के का मामा घर पहुंचा तो लड़के के माता-पिता घर की छत बैठे थे और यह प्रण कर रखा था कि यदि हमारा पुत्र सकुशल लौट आया तो हम राजी-खुशी नीचे आ जायेंगे नहीं तो छत से गिरकर अपने प्राण खो देंगे।

इतने में उस लड़के के मामा ने आकर यह समाचार दिया कि आपका पुत्र आ गया है तो उनको विश्वास नहीं आया तब उसके मामा ने शपथपुर्वक कहा कि आपका पुत्र अपनी स्त्री के साथ बहुत सारा धन साथ लेकर आया है तो सेठ ने आनन्द के साथ उसका स्वागत किया और बड़ी प्रसन्नता के साथ रहने लगे। इसी प्रकार से जो कोई भी सोमवार के व्रत को धारण करता है अथवा इस कथा को पढ़ता या सुनता है उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

जल अर्पण का महत्वः

सोमवार को शिवलिंग पर जल अर्पण का विशेष महत्व है। समुद्र मंथन से निकले हलाहल का पान करने से शिव का कंठ नीला पड़ा गया था। विष की उष्णता को शांत करने के लिए समस्त देवी-देवताओं ने शिव पर जल अर्पण किया। तभी से जल अर्पण की परंपरा है।

क्यों और कैसे करें मंगलवार का व्रतः

हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए या मंगल ग्रह का दोष दूर करने के लिए अगर आप भी मंगलवार का व्रत करते हैं तो जानें इसके नियम और लाभ सभी हनुमान भक्त मंगलवार और शनिवार का व्रत बजरंगबली के लिए रह सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मंगलवार का व्रत उन्हें करना चाहिए जिनकी कुंडली में मंगल ग्रह निर्बल हो और जिसके चलते वह शुभ फल नहीं दे रहा हो।

मंगलवार व्रत से लाभः

इस व्रत से कुंडली का मंगल ग्रह शुभ फल देने वाला होता है। मंगलवार व्रत से हनुमान जी की अशीम कृपा मिलती है। यह व्रत सम्मान बल साहस और पुरुषार्थ को बढ़ाता है। संतान प्राप्ति के लिए भी है यह व्रत बहुत लाभकारी है। इस व्रत के फलस्वरूप पापों से मुक्ति मिलती है। जो यह व्रत करते हैं उन पर भूत-प्रेत काली शक्तियों का दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता है।

21 मंगलवार के व्रत होने के बाद 22 वें मंगलवार को विधि-विधान से हनुमान जी का पूजन करके उन्हें चोला चढ़ाएं। फिर 21 ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें भोजन कराएं और क्षमतानुसार दान–दक्षिणा दें।

पापों से मुक्ति और शत्रुओं का होता है विनाशजानिए मंगलवार के व्रत का महत्वपूजा विधि और कैसे करें उद्यापनः

मंगलवार का व्रत सम्मान बल साहस और पुरुषार्थ को बढ़ाता है और संतान प्राप्ति के साथ संतान संबंधी सभी परेशानियों को दूर करता है। साथ ही इस व्रत से जादु टोना और काली शक्तियों से भी बचा जा सकता है।

पवनपुत्र भगवान हनुमान जी के भक्त मंगलवार के अवसर पर व्रत रहते हैं। मान्यताओं के अनुसार मंगलवार का व्रत रहने से कुंडली में मंगल ग्रह के निर्बल होने का प्रभाव बदल जाता है और शुभ लाभ प्राप्त होता है। शनि की महादशा और साढ़े साती को दूर करने के लिए भी यह व्रत बहुत लाभकारी है।

मंगलवार का व्रत सम्मान बल साहस और पुरुषार्थ को बढ़ाने वाला होता है। काफी लोग संतान प्राप्ति या संतान संबंधी परेशानियों को दूर करने के लिए भी इस दिन व्रत रखते हैं। इस व्रत के फलस्वरूप पापों से मुक्ति मिलती है और शत्रुओं का विनाश होता है। साथ ही जादु टोना और काली शक्तियों से भी बचा जा सकता है। आइए जानते हैं कब से करें मंगलवार के व्रत का आरंभ और इस व्रत की पूजा विधि और उद्यापन के बारे में।

व्रत का आरंभः

मंगलवार के व्रत का आरंभ किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करना शुभ माना जाता है। यदि आप मंगलवार के व्रत का आरंभ करते हैं तो आप 21 या 45 मंगलवार का

व्रत रखें। शास्त्रों के अनुसार ऐसा करना शुभ माना जाता है और इस व्रत के दौरान आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। कई लोग मंगलवार का व्रत आजीवन भी रहते हैं।

व्रत की पूजा विधि:

मंगलवार को व्रत रखने के लिए सबसे पहले इस दिन सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि कर निवृत होकर लाल वस्त्र धारंण करें। कोशिश करें कि आपने जो लाल वस्त्र पहना है वह सिला हुआ ना हो। इस दिन व्रत के दौरान आप मंदिर व घर दोनों में से कहीं पर भी पूजा कर सकते हैं। यदि आप घर में पूजा करते हैं तो ईशान कोण को साफ कर यहां पर एक चौकी रख उस पर लाल वस्त्र बिछाएं। फिर उस पर हनुमान जी की मूर्ति स्थापित करें और वहीं पर भगवान श्री राम और माता सीता की भी प्रतिमा अवश्य स्थापित करें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर आप जितने मंगलवार का व्रत रखेंगे उसका संकल्प लें और भगवान हनुमान जी से प्रार्थना करें की हमें कष्टों से मुक्त कराएं और सभी मनोकामनाएं पूर्ण करें। इसके बाद घी का दीपक या धूप दीप जलाकर पहले भगवान श्री राम और माता सीता की आरती करें फिर हनुमान जी की पूजा करें और उन्हें लाल फूल लाल वस्त्र लाल सिंदूर और चमेली के तेल की सीसी बजरंगबली के सामने रख दें या मूर्ति पर हल्का सा लगा दें।

इसके बाद हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ कर आरती करें और भगवान को गुड़ केले और लड्डू का भोग लगाएं और प्रसाद को परिवार के सभी सदस्यों में वितरित करें। व्रत को लेकर ध्यान रहे कि आपको इस व्रत में केवल एक बार शाम से पहले भोजन करना है। इस दौरान आप भोजन करते समय मीठा भोजन करें उसमें नमक नाम मात्र का भी नहीं होना चाहिए। दिन में आप दूध केले यानि सभी मीठे फलाहार वाली चीजें खा सकते हैं।

महिलाएं भी रख सकती हैं हनुमान जी का व्रत:

महिलाओं के मन में हनुमान जी के व्रत को लेकर संदेह बना रहता है। लेकिन हिंदु धर्मग्रंथों के अनुसार महिलाएं भी हनुमान जी का व्रत रख सकती हैं। किसी भी ग्रंथ शास्त्र या पुराण में महिलाओं द्वारा हनुमान जी की पूजा नहीं करने के विषय में नहीं लिखा गया है। लेकिन व्रत और पूजा के दौरान कुछ बातों पर विशेष ध्यान रखें। महिलाएं हनुमान जी को लाल वस्त्र या सिंदूर

ना चढ़ाएं क्योंकि हनुमान जी ब्रम्हचारी थे। साथ ही वह अपने शुद्ध दिनों में ही हनुमान जी की पूजा करें।

व्रत के दौरान इस पर रखें ध्यानः

यदि आप हनुमान जी का व्रत रखते हैं तो हमेशा के लिए अपने जीवनकाल में मांस मदिरा का सेवन करना छोड़ दें औऱ अपने आचार-विचार को स्वच्छ रखें। व्रत के दिन गरीबों में अपनी आवश्यकता अनुसार दान अवश्य करें और घर के आसपास या कहीं पर बंदर दिखें तो उन्हें केले खिलाएं। इससे आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

ऐसे करें व्रत का उद्यापनः

व्रत के शुरुआती मंगलवार को लिए गए संकल्प के दौरान 21 वें या 45 वें मंगलवार को आप व्रत का उद्यापन कर सकते हैं। इस दिन विधि विधान से हनुमान जी की पूजा करें और लाल वस्त्र अवश्य चढ़ाएं। साथ ही इस दिन हवन भी जरूर करें और ब्राम्हणों को भोजन करा कर दान भी दें।

व्रत के दौरान न करें ये गलतियां हनुमान जी भर-भर कर बरसाएंगे अपनी कृपाः

भगवना शंकर के रुद्र रूप तथा श्री राम के परम भक्त कहलाने वाले हनुमान जी को संकटमोचन के नाम से भी जाना जाता है। शास्त्रों में इनका वर्णन ज्यादातर श्री राम के परम भक्त के रूप में ही मिलती है। इसमें किए उल्लेख के अनुसार श्री राम के वनवास काल के दौरान रावण द्वारा श्री

राम की अर्धांगिनी माता सीता का अपहरण करने के उपरांत उनको उसके चगुंल से छुड़ाने में इन्होंने अपने आराध्य की हर संभव मदद की।

कहा जाता है ठीक वैसे ही ये अपने एवं श्री राम के सच्चे भक्तों की भी मदद करते हैं। मान्यता है अगर कोई भक्त किसी भी प्रकार की मुसीबत में फंस जाता है तो पवनपुत्र हनुमान जी स्वयं उसकी रक्षा करते हैं और उसके सभी संकटों को हर लेते हैं। यही कारण है कि इन्हें संकटमोचन कहा जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में हिंदू धर्म के प्रत्येक देवी-देवता को सप्ताह के एक-एक दिन समर्पित है जिसके अनुसार पूजा करने से जातक को कई तरह के लाभ प्राप्त होते हैं। हनुमान जी की पूजा के लिए मंगलवार का दिन सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार शनिवार के दिन भी इनकी पूजा की जा सकती है। परंतु अधिकतर लोग मंगलवार का दिन हनुमान जी को प्रसन्न करने में जुटे होते हैं। इसके चलते भक्त इनकी कृपा पाने के लिए व्रत आदि रखते हैं साथ ही साथ इनकी विधि विधान से इनकी पूजा भी करते हैं।

परंतु वहीं ऐसे भी बहुत से लोग होते हैं जो व्रत आदि रख लेते हैं मगर उसका सही से पालन नहीं कर पाते। इसका कारण इन्हें इस से संबंधित पूरी जानकारी न होना है। जिसके चलते लोग बजरंगबली की कृपा से वंचित रह जाते हैं। तो अगर आप चाहते हैं हनुमान जी भर-भर कर आप पर अपनी असीम कृपा बरसाए तो आगे दी गई व्रत विधि का पालन ज़रूर करें।

व्रत के नियमः

शास्त्रो के अनुसार मंगलवार के दिन इनका व्रत करना चाहिए। अगर किसी कारणवश न इस दिन व्रत न कर पाएं तो शनिवार के दिन इनका व्रत कर सकते हैं। ज्योतिष मान्यताओं के अनुसार जिनकी कुंडली में मंगल ग्रह निर्बल हो उन्हें विशेषतौर पर इस व्रत का पालन करना चाहिए।

इससे सिर्फ़ हनुमान जी की कृपा प्राप्त होती है बल्कि अपने ईष्ट देव की भी कृपा प्राप्त होती है। परंतु जिन जातकों की कुंडली में मंगल प्रबल हो उन्हें इस व्रत को करने की मनाही होती है।

शाम को करें ये काम:

सूर्यास्त के बाद हनुमान जी के मंदिर या घर में स्थापित हनुमान की प्रतिमा के समक्ष साफ़ आसन पर बैठ जाएं।अब इनके सामने सरसों के तेल का चैमुखा दीपक जलाएं।

फिर अगरबत्ती पुष्प आदि अर्पित करेंसिंदूर के साथ चमेली का तेल चढ़ाना चाहिए ध्यान रहे दीपक दिखाते समय हनुमान जी के निम्न मंत्रों का जप करके आख़िर में हनुमान चालीसा का पाठ ज़रूर करें।

- ॐ रामदूताय नम:
- ॐ पवन पुत्राय नम:

मंगलवार व्रत कथा:

एक निःसन्तान ब्राह्मण दम्पत्ति की है जो काफ़ी दुःखी थे। ब्राह्मण वन में पूजा करने गया और हनुमान जी से पुत्र की कामना करने लगा। घर पर उसकी स्त्री भी पुत्र की प्राप्त के लिये मंगलवार का व्रत करती थी। मंगलवार के दिन व्रत के अंत में हनुमान जी को भोग लगाकर भोजन करती थी। एक बार व्रत के दिन ब्राह्मणी ना भोजन बना पायी और ना भोग ही लगा सकी। तब उसने प्रण किया कि अगले मंगल को ही भोग लगाकर अन्न ग्रहण करेगी। भूखे प्यासे छः दिन के बाद मंगलवार के दिन तक वह बेहोश हो गयी।

हनुमान जी उसकी निष्ठा और लगन को देखकर प्रसन्न हो गये। उसे दर्शन देकर कहा कि वे उससे प्रसन्न हैं और उसे बालक देंगे जो कि उसकी सेवा किया करेगा। हनुमान जी ने उस स्त्री को पुत्र रत्न दिया और अंतर्ध्यान हो गए।

ब्राह्मणी इससे अति प्रसन्न हो गयी और उस बालक का नाम मंगल रखा। कुछ समय उपरांत जब ब्राह्मण घर आया तो बालक को देख पूछा कि वह कौन है? पत्नी ने सारी कथा अपने स्वामी को बतायी। पत्नी की बातों को छल पूर्ण जान ब्राह्मण ने सोचा कि उसकी पत्नी व्यभिचारिणी है। एक दिन मौका देख ब्राह्मण ने बालक को कुंए में गिरा दिया और घर पर पत्नी के पूछने पर ब्राह्मण

घबराया। पीछे से मंगल मुस्कुरा कर आ गया। ब्राह्मण आश्चर्यचकित रह गया। रात को हनुमानजी ने उसे सपने में सब कथा बतायी तो ब्राह्मण अति हर्षित हुआ। फ़िर वह दम्पति मंगल का व्रत रखकर आनंद का जीवन व्यतीत करने लगे।

मंगलवार के दिन करें ये उपाय बदल जाएगा भाग्यः

वैदिक ग्रंथों में मंगल का दिन सबसे शुभ और कल्याणकारी माना गया। इसी दिन भक्तराज हनुमान अपने भक्तों की सुध लेते हैं। अगर आपको लग रहा है कि सफलता हाथ लगते-लगते चूक जाती है और कहीं भी कामयाबी हासिल नहीं हो रही है तो मंगलवार को कुछ उपाय करें। आपको निश्चित तौर पर लाभ मिलेगा और बंद किस्मत का ताला खुल जाएगा।

वैदिक ग्रंथों में मंगल का दिन सबसे शुभ और कल्याणकारी माना गया । इसी दिन भक्तराज हनुमान अपने भक्तों की सुध लेते हैं। अगर आपको लग रहा है कि सफलता हाथ लगते-लगते चूक जाती है और कहीं भी कामयाबी हासिल नहीं हो रही है तो मंगलवार को कुछ उपाय करें। आपको निश्चित तौर पर लाभ मिलेगा और बंद किस्मत का ताला खुल जाएगा।

मंगलवार के दिन तांत्रिक हनुमान यंत्र की स्थापना करने का बड़ा महत्व मंगलवार को अपने पूजन स्थान पर करें तांत्रिक हनुमान यंत्र की स्थापना करें और हर दिन इस यंत्र की पूजा करें। जल्दी ही आपको इसका फल भी मिलने लगेगा।

मंगलवार के दिन शाम के समय किसी हनुमान मंदिर में जाएं और एक सरसों के तेल का और एक शुद्ध घी का दीपक जलाएं। इसके बाद वहीं बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें। हनुमानजी की कृपा पाने का ये एक अचूक उपाय है।

मंगलवार के दिन सुबह स्नान आदि करने के बाद किसी पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दिया जलाएं। इसके बाद पूर्व दिशा की ओर मुख करके तुलसी की माला से राम नाम का जप करें। कम से कम 11 माला जप अवश्य करें।

किसी भी मंगलवार को शाम के समय हनुमानजी को केवड़े का इत्र व गुलाब की माला चढ़ाएं। हनुमानजी को प्रसन्न करने का ये बहुत ही अचूक उपाय ।इस उपाय से हर मनोकामना पूरी हो जाती है।

मंगलवार को पास ही स्थित हनुमानजी के किसी मंदिर में जाएं और उन्हें उन्हें सिंदूर व चमेली का तेल अर्पित करें और अपनी मनोकामना कहें। इससे हनुमानजी प्रसन्न होते हैं और भक्त की हर मनोकामना पूरी कर देते हैं।

मंगलवार के दिन सुबह स्नान करने के बाद बड़ के पेड़ का एक पत्ता तोड़ें और इसे साफ स्वच्छ पानी से धो लें। अब इस पत्ते को कुछ देर हनुमानजी के सामने रखें और इसके बाद इस पर केसर से श्रीराम लिखें। अब इस पत्ते को अपने पर्स में रख लें। साल भर आपका पर्स पैसों से भरा रहेगा।

अगर आप शनि दोष से पीड़ित हैं तो इस दिन काली उड़द व कोयले की एक पोटली बनाएं। इसमें एक रुपए का सिक्का रखें। इसके बाद इस पोटली को अपने ऊपर से उसार कर किसी नदी में प्रवाहित कर दें और फिर किसी हनुमान मंदिर में जाकर राम नाम का जप करें इससे शनि दोष का प्रभाव कम हो जाएगा।

बुधवार पूजाः

बुधवार यानि बुध का दिन वैसे बुध एक महात्मा भी हुए हैं जिन्हें हम गौतम बुद्ध के नाम से जानते हैं लेकिन यहां बात हो रही है बुध ग्रह की। बुध ग्रह को चंद्रमा और बृहस्पति दोनों अपना पुत्र मानते हैं। इसलिये माना जाता है कि भगवान बुध में चंद्रमा और बृहस्पति दोनों के गुण विद्यमान हैं। सप्ताह के लिहाज से बुधवार सप्ताह का चौथा दिन है।

इस दिन भगवान श्री गणेश जी की पूजा करना बहुत ही शुभ माना जाता है। भगवान श्री कृष्ण की पूजा भी कुछ लोग इस दिन करते हैं। हालांकि इस दिन शुभ कार्यों के लिये यात्रा पर जाना वर्जित माना गया है। इसी कारण विवाहित स्त्री को मायके से ससुराल भी नहीं भेजा जाता। इस बारे में बुधवार की कथा का भी पुराणों में जिक्र किया गया है।

बुधवार व्रत कथाः

पौराणिक ग्रंथों में बुधवार के व्रत की कथा कुछ इस प्रकार है। बहुत समय पहले की बात है कि एक साहूकार का नया-नया विवाह हुआ था। उसकी पत्नी मायके गयी हुई थी। नया-नया विवाह था,नई-नई उमंग थी साहूकार का परिवार भी कुछ खास बड़ा नहीं था,जो रिश्तेदार थे उनके घर बहुत दूर थे। अब साहूकार को अकेलापन खाये जा रहा था।

उससे रहा न गया और साहूकार जा पंहुचा ससुराल। साहूकार की बड़ी आवभगत हुई लेकिन ससुराल में तो अपनी पत्नी से खुलकर बात करना दूर सूरत देखना तक मुश्किल हो रहा था।

अगले ही दिन साहूकार ने कह दिया कि विदाई की तैयारी कर लीजिये हमें निकलना हैं। अब संयोगवश वह दिन था बुधवार का,सास-ससुर ने समझाने का प्रयास किया कि बेटा आज बुधवार का दिन है इस दिन बेटी की विदाई नहीं करने का रिवाज़ है। बिटाई की विदाई क्या किसी भी शुभ कार्य के लिये यात्रा पर जाना बुधवार के दिन शुभ नहीं माना जाता। लेकिन साहूकार नहीं माना और कहा मैं इन सब बातों को नहीं मानता आप हमें जाने का आशीर्वाद दीजिये। अब अपने दामाद के आगे सास-ससुर की कहां चलने वाली थी,मन मसोसकर तैयारी करनी पड़ी। बेटी की विदाई कर दी गई।

अब चलते-चलते रस्ते में साहूकार की पत्नी को प्यास लग जाती है। साहूकार जैसे पानी लेने के लिये जाता है तो वापस आते ही उसकी हैरानी का कोई ठिकाना नहीं रहता। अपने ही हमशक्ल को गाड़ी में पत्नी की बगल में बैठे देखता है। उसकी पत्नी भी एक शक्ल के दो-दो व्यक्तियों को देखकर परेशानी में पड़ गई कि उसका पति कौनसा है।

जैसे ही साहूकार ने पत्नी के पास बैठे व्यक्ति से पूछा कि वह कौन है तो पलट कर जवाब दिया कि भैया मैं तो फलां नगर का साहूकार हूं और फलां नगर से अपनी पत्नी को लेकर आ रहा हूं तुम बताओ तुम कौन हो जो मेरा वेश धर कर यहां आ कबाब में हड्डी बनने के लिये आ धमके हो। ऐसे बहस बाजी करते-करते दोनों में झगड़ा बढ़ गया।

झगड़े को देखते हुए राज्य के सिपाही वहां आ पंहुचे और साहूकार को पकड़ लिया। अब सिपाही भी चक्कर में कि दोनों की शक्ल तो एक समान है। उन्होंने साहूकार की पत्नी से पूछा कि उसका पति इनमें से कौनसा है वह बेचारी क्या जवाब देती। तब साहूकार ने हाथ जोड़ लिये और भगवान से विनती करने लगा कि हे भगवन यह आपकी क्या माया है।

तभी आकाशवाणी हुई कि मूर्ख याद कर कुछ देर पहले ही तूने अपने सास-ससुर की आज्ञा न मानकर भगवान बुध का अपमान किया और बुधवार के दिन तू अपनी पत्नी को लेकर चल पड़ा जबकि तुझे इस दिन गमन नहीं करना चाहिये था। यह स्वयं बुध देव हैं जो तुम्हें सबक सिखाने के लिये तुम्हारे वेश में हैं। तब साहूकार ने कान पकड़ कर माफी मांगी और आगे से कभी भी ऐसा न करने का वचन किया और बुधवार को नियमपूर्वक व्रत पालन करने का संकल्प किया।

तब जाकर साहूकार के रूप में प्रकट हुए बुध देवता अंतर्ध्यान हुए और साहूकार अपनी पत्नी को लेकर घर जा सका। इस घटना के पश्चात साहूकार और उसकी पत्नी दोनों नियमित रूप से बुधवार का व्रत पालन करने लगे।

मान्यता है कि जो भी व्यक्ति इस कथा को कहता है या सुनता है या फिर पढ़ता है उसे बुधवार के दिन यात्रा करने से किसी तरह का दोष नहीं लगता और समस्त सुखों की प्राप्ति होती है। बुध ग्रह की शांति और सर्व-सुख के इच्छुक स्त्री-पुरुष बुधवार के इस व्रत कर सकते हैं।

ज्ञान,बुद्धि,कार्य,व्यापार आदि में उन्नति के लिये भी बुधवार का व्रत बेहद शुभ और फलदायी माना जाता है। बुधवार के दिन बुद्ध देवता के साथ-साथ भगवान गणेश जी की पूजा का विधान भी है।

बुधवार व्रत व पूजा विधिः

पौराणिक मान्यता के अनुसार बुधवार के व्रत का आरंभ विशाखा नक्षत्रयुक्त बुधवार को करना चाहिये और इसके बाद लगातार सात बुधवार तक व्रत करना चाहिये। व्रत शुरु करने से पहले गणेश जी सहित नवग्रह पूजन करना भी जरूरी माना जाता है। व्रत के दौरान भागवत महापुराण का पाठ भी करवाया जा सकता है।

इसके अलावा शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से भी बुधवार का व्रत करना शुभ माना जाता है। प्रात:काल उठें व नित्यक्रियाओं से निपटने के पश्चात स्नानादि से स्वच्छ होकर भगवान बुध की पूजा करनी चाहिये। व्रती हरे रंग की माला या वस्त्रों का प्रयोग करे तो उत्तम रहता है।

यदि पूजा के लिये भगवान बुध की प्रतिमा न मिले तो भगवान शिव शंकर की प्रतिमा के निकट भी पूजा की जा सकती है। दिन भर के व्रत के पश्चात शाम को भी पूजा करनी चाहिये। और केवल एक समय भोजन करना चाहिये। व्रत में हरे रंग के वस्त्र,फूल या सब्ज़ी आदि दान करने चाहिये। इस दिन एक समय दही,मूंग दाल का हलवा या फिर हरी वस्तु से बनी चीजों का सेवन करना चाहिये। कहते विधि-विधान से अगर इस व्रत को किया जाये तो जीवन में सुख शांति रहती है और घर धन-धान्य से भरे रहते हैं। माता लक्ष्मी भी व्रती की मनोकामनाए पूर्ण करती हैं।

गणेश भगवान को प्रसन्न करने के लिए पढ़ें बुधवार व्रत कथाः

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक वार अलग अलग देवी देवताओं को समर्पित हैं हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक वार अलग अलग देवी देवताओं को समर्पित हैं। बुधवार गणेश भगवान को समर्पित माना जाता है। गणेश भगवान को हिंदू धर्म शास्त्रों में सर्वप्रथम पूज्य माना गया है। कुछ लोग गणेश भगवान की कृपा प्राप्त करने के लिए बुधवार का व्रत भी करते हैं।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस व्रत की शुरुआत से लेकर अगले 7 बुधवार तक साधक को व्रत करना चाहिए। मान्यताओं के अनुसार इस व्रत को करने वाले जातक के जीवन में सुख, शांति और यश बना रहता है। साथ ही उसके अन्न के भंडार और धन कभी खाली नहीं होते हैं। पढ़ें व्रत की कथा।

बुधवार व्रत कथा :

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, प्राचीन समय की बात है जब एक धनी व्यक्ति मधुसूदन अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। वहां वह कुछ दिन रहा और फिर अपने सास-ससुर से विदा करने को कहा। किन्तु वहां सब बोले कि आज बुद्धवार का दिन है आज के दिन गमन नहीं करना चाहिए।

वह व्यक्ति नहीं माना और हठधर्मी करके बुद्धवार के दिन ही पत्नी को विदा कराकर अपने नगर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसकी पत्नी को प्यास लगी, तो वह व्यक्ति लोटा लेकर रथ से उतरकर पानी लेने को चल दिया। जैसे ही वह पानी लेकर अपनी पत्नी के पास लौटा तो वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि उसके ही जैसी सूरत और वेश-भूषा वाला एक व्यक्ति उसकी पत्नी के साथ रथ में बैठा हुआ है।

वह क्रोधित हुआ और उसने क्रोध से कहा, 'तू कौन है जो मेरी पत्नी के निकट बैठा हुआ है?' दूसरा व्यक्ति बोला, 'यह मेरी पत्नी है। इसे मैं अभी-अभी ससुराल से विदा कराकर ले जा रहा हूं।' वे दोनों व्यक्ति परस्पर झगड़ने लगे।तभी राज्य के सिपाही आकर लोटे वाले व्यक्ति को पकड़ने लगे। स्त्री से पूछा, तुम्हारा असली पति कौन है? तब पत्नी शांत रही, क्योंकि दोनों एक जैसे थे।

वह किसे अपना असली पति बताती। वह व्यक्ति ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ बोला, 'हे परमेश्वर! यह क्या लीला है कि सच्चा झूठा बन रहा है। तभी आकाशवाणी हुई कि मूर्ख आज बुद्धवार के दिन तुझे गमन नहीं करना चाहिए था। पर तूने किसी की बात नहीं मानी और चल पड़ा।

यह सब लीला बुद्धदेव भगवान की है। तब उस व्यक्ति ने बुद्धदेव जी से प्रार्थना की। उसने अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। तब बुद्धदेव जी अन्तर्ध्यान हो गए। इसके बाद वह व्यक्ति अपनी स्त्री को लेकर घर आया। इसके बाद से ही वे दोनों पति-पत्नी बुद्धवार का व्रत हर सप्ताह नियमपूर्वक करने लगे। मान्यता है कि जो व्यक्ति इस कथा को सुनता है और औरों को भी सुनाता है, उसको बुद्धवार के दिन यात्रा करने का कोई दोष नहीं लगता है और उसको सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

बुधवार गणेश भगवान को समर्पित माना जाता है हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक वार अलग अलग देवी देवताओं को समर्पित हैं। बुधवार गणेश भगवान को समर्पित माना जाता है। गणेश भगवान को हिंदू धर्म शास्त्रों में सर्वप्रथम पूज्य माना गया है। कुछ लोग गणेश भगवान की कृपा प्राप्त करने के लिए बुधवार का व्रत भी करते हैं।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस व्रत की शुरुआत से लेकर अगले 7 बुधवार तक साधक को व्रत करना चाहिए। मान्यताओं के अनुसार इस व्रत को करने वाले जातक के जीवन में सुख, शांति और यश बना रहता है। साथ ही उसके अन्न के भंडार और धन कभी खाली नहीं होते हैं। पढ़ें व्रत की कथा।

गुरूवार व्रत की विधि और व्रत कथाः

विविध धर्मों-त्यौहारों के रीति-रिवाज,पूजा पद्धति,धार्मिक मंत्रों का समग्र संकलन गुरूवार या वीरवार को भगवान बृहस्पति की पूजा का विधान है। बृहस्पति देवता को बुद्धि और शिक्षा का देवता माना जाता है। गुरूवार को बृहस्पति देव की पूजा करने से धन,विद्या,पुत्र तथा मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। परिवार में सुख तथा शांति रहती है। गुरूवार का व्रत जल्दी विवाह करने के लिये भी किया जाता है।

गुरूवार व्रत की विधिः

लेकिन गुरूवार की पूजा करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पूजा विधि-विधान के अनुसार हो। व्रत वाले दिन प्रात: काल उठकर बृहस्पति देव का पूजन करना चाहिए। वृहस्पति देव का पूजन पीली वस्तुएं,पीले फूल,चने की दान,पीली मिठाई,पीले चावल आदि का भोग लगाकर किया जाता है। इस व्रत में केले का पूजन ही करें। कथा और पूजन के समय मन,कर्म और वचन से शुद्ध होकर मनोकामना पूर्ति के लिये वृहस्पतिदेव से प्रार्थना करनी चाहिए। दिन में एक समय ही भोजन करें। भोजन चने की दाल आदि का करें,नमक न खाएं,पीले वस्त्र पहनें,पीले फलों का प्रयोग करें,पीले चंदन से पूजन करें। पूजन के बाद भगवान बृहस्पति की कथा सुननी चाहिये।

गुरूवार व्रत की कथाः

प्राचीन समय की बात है। किसी राज्य में एक बड़ा प्रतापी तथा दानी राजा राज्य करता था। वह प्रत्येक गुरूवार को व्रत रखता एवं भूखे और गरीबों को दान देकर पुण्य प्राप्त करता था परन्तु यह बात उसकी रानी को अच्छा नहीं लगता था। वह न तो व्रत करती थी और न ही किसी को एक भी पैसा दान में देती थी और राजा को भी ऐसा करने से मना करती थी।

एक समय की बात है,राजा शिकार खेलने को वन को चले गए थे। घर पर रानी और दासी थी। उसी समय गुरु बृहस्पतिदेव साधु का रूप धारण कर राजा के दरवाजे पर भिक्षा मांगने को आए। साधु ने जब रानी से भिक्षा मांगी तो वह कहने लगी,हे साधु महाराज,मैं इस दान और पुण्य से तंग आ गई हूं। आप कोई ऐसा उपाय बताएं, जिससे कि सारा धन नष्ट हो जाए और मैं आराम से रह सकूं।

बृहस्पतिदेव ने कहा, हे देवी,तुम बड़ी विचित्र हो,संतान और धन से कोई दुखी होता है। अगर अधिक धन है तो इसे शुभ कार्यों में लगाओ,कुवांरी कन्याओं का विवाह कराओ, विद्यालय और बाग़-बगीचे का निर्माण कराओ, जिससे तुम्हारे दोनों लोक सुधरें,परन्तु साधु की इन बातों से रानी को ख़ुशी नहीं हुई। उसने कहा- मुझे ऐसे धन की आवश्यकता नहीं है,जिसे मैं दान दूं और जिसे संभालने में मेरा सारा समय नष्ट हो जाए।

तब साधु ने कहा यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो मैं जैसा तुम्हें बताता हूं तुम वैसा ही करना। बृहस्पतिवार के दिन तुम घर को गोबर से लीपना,अपने केशों को पीली मिटटी से धोना, केशों को धोते समय स्नान करना, राजा से हजामत बनाने को कहना,भोजन में मांस मदिरा खाना,कपड़ा धोबी के यहां धुलने डालना। इस प्रकार सात बृहस्पतिवार करने से तुम्हारा समस्त धन नष्ट हो जाएगा। इतना कहकर साधु रुपी बृहस्पतिदेव अंतर्ध्यान हो गए।

साधु के कहे अनुसार करते हुए रानी को केवल तीन बृहस्पतिवार ही बीते थे कि उसकी समस्त धन-संपत्ति नष्ट हो गई। भोजन के लिए राजा का परिवार तरसने लगा। तब एक दिन राजा रानी

से बोला हे रानी, तुम यहीं रहो, मैं दूसरे देश को जाता हूं, क्योंकि यहां पर सभी लोग मुझे जानते हैं। इसलिए मैं कोई छोटा कार्य नहीं कर सकता। ऐसा कहकर राजा परदेश चला गया। वहां वह जंगल से लकड़ी काटकर लाता और शहर में बेचता। इस तरह वह अपना जीवन व्यतीत करने लगा। इधर,राजा के परदेश जाते ही रानी और दासी दुखी रहने लगी।

एक बार जब रानी और दासी को सात दिन तक बिना भोजन के रहना पड़ा,तो रानी ने अपनी दासी से कहा- हे दासी, पास ही के नगर में मेरी बहन रहती है। वह बड़ी धनवान है। तू उसके पास जा और कुछ ले आ ताकि थोड़ा-बहुत गुजर-बसर हो जाए। दासी रानी के बहन के पास गई। उस दिन बृहस्पतिवार था और रानी की बहन उस समय बृहस्पतिवार व्रत की कथा सुन रही थी। दासी ने रानी की बहन को अपनी रानी का सन्देश दिया, लेकिन रानी की बड़ी बहन ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब दासी को रानी की बहन से कोई उत्तर नहीं मिला तो वह बहुत दुखी हुई और उसे क्रोध भी आया।

दासी ने वापस आकर रानी को सारी बात बता दी। सुनकर रानी ने अपने भाग्य को कोसा। उधर, रानी की बहन ने सोचा कि मेरी बहन की दासी आई थी, परन्तु मैं उससे नहीं बोली,इससे वह बहुत दुखी हुई होगी। कथा सुनकर और पूजन समाप्त कर वह अपनी बहन के घर आई और कहने लगी- हे बहन, मैं बृहस्पतिवार का व्रत कर रही थी। तुम्हारी दासी मेरे घर आई थी परन्तु जब तक कथा होती है, तब तक न तो उठते हैं और न ही बोलते हैं, इसलिए मैं नहीं बोली। कहो दासी क्यों गई थी।

रानी बोली- बहन,तुमसे क्या छिपाऊं,हमारे घर में खाने तक को अनाज नहीं था। ऐसा कहते-कहते रानी की आंखे भर आई। उसने दासी समेत पिछले सात दिनों से भूखे रहने तक की बात अपनी बहन को विस्तारपूर्वक सूना दी। रानी की बहन बोली- देखो बहन, भगवान बृहस्पतिदेव सबकी मनोकामना को पूर्ण करते हैं।

देखो,शायद तुम्हारे घर में अनाज रखा हो। पहले तो रानी को विश्वास नहीं हुआ पर बहन के आग्रह करने पर उसने अपनी दासी को अन्दर भेजा तो उसे सचमुच अनाज से भरा एक घड़ा मिल गया। यह देखकर दासी को बड़ी हैरानी हुई। दासी रानी से कहने लगी- हे रानी,जब हमको भोजन नहीं मिलता तो हम व्रत ही तो करते हैं,इसलिए क्यों न इनसे व्रत और कथा की विधि पूछ

ली जाए, ताकि हम भी व्रत कर सके। तब रानी ने अपनी बहन से बृहस्पतिवार व्रत के बारे में पूछा।

उसकी बहन ने बताया,बृहस्पतिवार के व्रत में चने की दाल और मुनक्का से विष्णु भगवान का केले की जड़ में पूजन करें तथा दीपक जलाएं,व्रत कथा सुनें और पीला भोजन ही करें। इससे वृहस्पतिदेव प्रसन्न होते हैं। व्रत और पूजन विधि बतलाकर रानी की बहन अपने घर को लौट गई। सातवें रोज बाद जब गुरूवार आया तो रानी और दासी ने निश्चयनुसार व्रत रखा।

घुड़साल में जाकर चना और गुड़ बीन लाई और फिर उसकी दाल से केले की जड़ तथा विष्णु भगवान का पूजन किया।

अब पीला भोजन कहां से आए इस बात को लेकर दोनों बहुत दुखी थे। चूंकि उन्होंने व्रत रखा था इसलिए गुरुदेव उनपर प्रसन्न थे। इसलिए वे एक साधारण व्यक्ति का रूप धारण कर दो थालों में सुन्दर पीला भोजन दासी को दे गए। भोजन पाकर दासी प्रसन्न हुई और फिर रानी के साथ मिलकर भोजन ग्रहण किया।

उसके बाद वे सभी गुरूवार को व्रत और पूजन करने लगी। बृहस्पति भगवान की कृपा से उनके पास फिर से धन-संपत्ति हो गया,परन्तु रानी फिर से पहले की तरह आलस्य करने लगी। तब दासी बोली- देखो रानी,तुम पहले भी इस प्रकार आलस्य करती थी,तुम्हें धन रखने में कष्ट होता था,इस कारण सभी धन नष्ट हो गया और अब जब भगवान गुरुदेव की कृपा से धन मिला है तो तुम्हें फिर से आलस्य होता है।

बड़ी मुसीबतों के बाद हमने यह धन पाया है, इसलिए हमें दान-पुण्य करना चाहिए, भूखे मनुष्यों को भोजन कराना चाहिए, और धन को शुभ कार्यों में खर्च करना चाहिए,जिससे तुम्हारे कुल का यश बढ़ेगा,स्वर्ग की प्राप्ति हो और पित्तर प्रसन्न हो।

दासी की बात मानकर रानी अपना धन शुभ कार्यों में खर्च करने लगी,जिससे पूरे नगर में उसका यश फैलने लगा। गुरुवार को बृहस्पति भगवान का व्रत रखने से घर में हमेशा सुख-संपत्ति की बहार रहती है।

एकादशी व्रत कथा महत्वः

हिन्दू धर्मानुसार प्रत्येक महीने की एकादशी तिथि को भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। इस दिन एकादशी व्रत किया जाता है। वैष्णव समाज और हिन्दू धर्म के लिए एकादशी व्रत महत्वपूर्ण और पुण्यकारी माना जाता है।

नारदपुराण के अनुसार एकादशी का व्रत भगवान विष्णु को बेहद प्रिय होता है। जिस तरह चतुर्थी को गणेश जी, त्रयोदशी को शिवजी, पंचमी को लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है उसी प्रकार एकादशी तिथि को भगवान श्री हरि विष्णु जी की पूजा की जाती है।

एकादशी व्रत के लिए दशमी के दिन सुबह स्नान करने के बाद भगवान विष्णु की आराधना करना चाहिए तथा रात को पूजा स्थल के समीप सोना चाहिए।

अगले दिन उठाकर (एकादशी) प्रात: स्नान के बाद व्यक्ति को पुष्प,धूप आदि से भगवान विष्णु की पूजा करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करना चाहिए:

एकादशी निराहारः स्थित्वाद्यधाहं परेऽङ्हन।
भोक्ष्यामि पुण्डरीकाक्ष शरणं में भवाच्युत।।

पूरे दिन व्रत रखने के बाद रात को भगवान विष्णु की श्रद्धाभाव से आराधना करनी चाहिए। इसके बाद द्वादशी के दिन सुबह उठकर स्नान कर भगवान विष्णु को भोग लगाकर पंडित को भोजन करने को बाद स्वयं अन्न ग्रहण करना चाहिए।

शुक्रवार व्रत कथाः

सुख,शाति,पसा,सहाग सब कुछ देती हैं संतोषी माता:

हमारे धार्मिक ग्रथों में शुक्रवार का दिन संतोषी माता की पूजा के लिए निर्धारित है। अत्यंत ही सरल,सानी से प्रसन्न होने वाली संतोषी माता का व्रत हर तरह से गृहस्थी को धन-धान्य,पत्र,न्न-वस्त्र से परिपूर्ण रखता है और मां अपने भक्त को हर कष्ट से बचाती हैं।

व्रत कथा:

बहुत समय पहले की बात है। एक बुढिया के सात पुत्र थे। उनमें से 6 कमाते थे और एक निकम्मा था। बुढिया अपने 6 बेटों को प्रेम से खाना खिलाती और सातवें बेटे को बाद में उनकी थाली की बची हुई जूठन खिला दिया करती। सातवें बेटे की पत्नी इस बात से बड़ी दुखी थी क्योंकि वह बहुत भोला था और ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देता था।

एक दिन बहू ने जूठा खिलाने की बात अपने पति से कही पति ने सिरदर्द का बहाना कर,सोई में लेटकर स्वयं सच्चाई देख ली। उसने उसी क्षण दूसरे राज्य जाने का निश्चय किया। जब वह जाने लगा,तो पत्नी ने उसकी निशानी मांगी। पत्नी को अंगूठी देकर वह चल पड़ा। दूसरे राज्य पहुंचते ही उसे एक सेठ की दुकान पर काम मिल गया और जल्दी ही उसने मेहनत से अपनी जगह बना ली।

संतोषी माता के मंदिर में जाकर संकल्प लिया:

इधर,बेटे के घर से चले जाने पर सास-ससुर बहू पर अत्याचार करने लगे। घर का सारा काम करवा के उसे लकड़ियां लाने जंगल भेज देते और आने पर भूसे की रोटी और नारियल के खोल में पानी रख देते। इस तरह अपार कष्ट में बहू के दिन कट रहे थे। एक दिन लकड़ियां लाते समय